Vol. IX
Number-2

ISSN 2319-7129
(Special Issue) January, 2018

UGC Notification No. 62981

EDU WORLD

A Multidisciplinary International
Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned by CamScanner

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. IX, Number - 2 January, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned by CamScanner

CONTENTS

Existential Thinkers 1
Dr. Yogesh Raman Patil

Positive Affirmations and its Benefits on Psychological Well-Being 5
Minakshi Rana

Indian Women and Social Reality 12
Dr. Shweta Tiwari

Redefining Role of Women Through Empowerment-Analysis and Solutions 15
Dr. Sonal Shankar

Influence of the Bhagavadgītā in Life 24
Arun P. R.

Impact of Work Stress Level at Work Place 31
Vaishnavi Kumari

Themes of Exploitation in Anita Desai's 'Fasting, Feasting' 34
Ms. Aditi Barve

Women at the Threshold of Emotional Freedom : A Feminist Reading on Shashi Deshpande's Novels : *The Dark Holds no Terrors and If I Die Today* 40
Aditi Barve

Impact of Physical Education and Sports in Promoting Social Values Among B. Ed. Students of Jamshedpur 45
Abhishek Kumar

Adverse Effects of Azadirachtin (Bioneem) on Behaviour and Oxygen Consumption of Fresh Water Fish Garra Mullya (Sykes) 49
Surekha Bhimrao Bansode

Geoinformatics: Application and Limitations in Water Resource Management for Sustainable Development 52
Dr. Neera Rastogi and Giriraj Merdwal

बिहार में डेयरी विकास का विवेचनात्मक अध्ययन 55
अनुज कुमार और डॉ. सुरेश साह

भारतातील उच्च शिक्षणावरील खर्चः विद्यार्थी व शिक्षण संस्था वाढीवरील परीणाम 57
प्रो. डॉ. पुरुषोत्तम गाटे

Scanned by CamScanner

भारताच्या योजनेत्तर खर्चाची संरचना आणि कल 64
प्रो. डॉ. पुरुषोत्तम गाटे

The Role of Public Libraries in Distance and Open Learning 69
Isha Sk

Comparative Study of Thermodynamic Parameters of Oxidation of 5-chloro-2-hydroxy-4 Methylacetophenone Anil and its Substituted chloro Anils by Ce (IV) in Acidic Medium: Part-IX 75
Hemant Mahajan

Comparative Study of Thermodynamic Parameters of Oxidation of 5-Chloro-2-Hydroxy-4 Methylacetophenone Anil and its Substituted Chloro Anils by Ce (IV) in Acidic Medium: Part-VIII 83
Hemant Mahajan

Diversity of Blue Green Algae from Sulwade Barrage of River Tapti-II Dhule (M. S. India) 91
Sandhya Patil

Diversity of Blue Green Algae from Sulwade Barrage of River Tapti-III Dhule (M. S. India) 96
Sandhya Patil

Study of Biological Assessment and Physico-Chemical Parameters of Bhima Basin River in Dry and Wet Season 101
B. S. Kamble and A. P. Acharya

RTE in BTC (Assam): Tribal Issues and Beyond 106
Dr. Jyotiraj Pathak

Urban Management : A Perspective Approach 117
Dr. Neera Rastogi

Crictically Evaluating an Efficiency of Black and Scholes' Model of Shares and Indices in Indian Stock Market 119
Dr. Anil Matkar Thane

'शब्द' संहिता का प्रथम पृष्ठः- 'मन की बात' 2014 130
स्वतन्त्र कुमार सोनी

Technological Needs and Marketing Behaviour of Dry Land Farm Women in Poultry Keeping 134
Vengatesan D. and P. Ramesh

Magnetic Loss Studies in Al Substituted $Li_{0.5}Fe_{2.5}O_4$ 139
Swati Patil

Scanned by CamScanner

Potential and Prospects of *Kamdhenu* Tourism 144
Dr. Saurabh Dixit

Changed Attitudes Towards Girls Marital Choice and the Problem of Marriage in a Farming Family 151
Dr. Ramesh H. Patil

Endemic Species of Flowering Plants of Peninsular India Occur in Satpuda Mountain Ranges of Nandurbar and Dhule Districs, Maharashtra, India with Special Reference to Family Zinigiberaceae and Commelinaceae 158
Garud B.D.

रहीम के काव्य में पारिवारिक आदर्श 164
डॉ. अमानुल्ला एम. शेख

आधुनिक युग में नव सोशल मीडिया का स्वरूप 167
डॉ. अमानुल्ला एम. शेख

जनसंचार माध्यमों में हिंदी विज्ञापनों का महत्त्व 169
डॉ. अमानुल्ला शेख

मानव अधिकार संरक्षण एवं कानून, उद्भव, विकास, आधुनिक युग में एक लोकप्रिय विषय के रुप मे चुनौती - एक आलोचनात्मक अध्ययन? Human Right and Law : Issues and Challenges 172
Prof. (Dr.) Chandra Shekhar Azad

Absorption Studies on Activated Carbon Prepared Form Waste Material 183
B. S. Kamble

Indian National Congress-History, Ideology and Facts 189
Som Nath Trivedi

Ethnomathematics and its Role within Mathematics 204
Mr. Harish Ganesh Nemade

Numerical Study on Natural Convection with Surface Radiation from a Planar Heat Generating Element Mounted Freely in a Vertical Channel: An Approach of FEM Simulation 208
P. V. Janardhana Reddy

Contribution of Recent Patents in Sustainable Development of India 218
Mrs. Kodam Aruna G.

Corporate Governance: Monitoring and Executive Compensation in Respect to Indian Financial Sector. 221
Bikram Paul Singh Lehri

Scanned by CamScanner

Bacteriological Profiling of Street Vended Panipuri at Different Locations of Parbhani City (Maharashtra), India 232
Sunita R. Mukkawar

District Level Disparity in Irrigation System in West Bengal 239
Sujit Basu

Integrating ICT in Blended Learning in Education to Improve Student Teachers' Learning Experience-A Study 247
Dr. Naik Tarsing B.

अध्यापक प्रशिक्षणार्थीयों का छात्र प्रशिक्षण अनुभव कार्यक्रम का समीक्षात्मक अध्ययन 252
प्रो. डॉ. रश्मी आर. नायगावकर (रेखा उपाध्ये)

वैदिक वाङ्मय में समाज का स्वरूप 255
डॉ. विनय कुमार मिश्र

A Study of Use of Information Technology and Computerization in Higher Educational Institutions in Pune City 261
Dileep Kumar Verma (Er.)

Teaching-Learning with ICT at Primary Level 267
Dileep Kumar Verma (Er.)

On Weak Fuzzy Automaton Homomorphism of X-Connected Fuzzy Automata 272
S.S.Dhure

Optimism, Pessimism, Mental Health and Personality Adjustment 301
J. N. Choube

Rape: Causes and Prevention 305
Dr. Jaiprakash N. Choube

The Level of Educational Aspirations Among the Higher Secondary School Students of CBSE and U.P. Board 308
Shalini Gupta and Dr. Rahul Sirohi

विमर्श साहित्य : आज की जरूरत 311
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

Inclusion and Equity: A Paradox in Education 315
Dr. Reema Lamba

Activity Based Learning Among School Teachers: An Attitudinal Study 319
Dr. Vipinder Nagra

Scanned by CamScanner

विमर्श साहित्य : आज की जरूरत

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे*

आज का समय विमर्शो का समय है इसे यदि हम विमर्श युग या विमर्श काल कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शब्दकोष के अनुसार विमर्श का अर्थ विचाार, विवेचन, परीक्षण आदि है। इसके अलावा सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना–समझना, गुण–दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना, जॉचना–परखना, परामर्श या सलाह करना आदि के अर्थ में भी विमर्श शब्द प्रयोग में लाया जाता है। विमर्श शब्द मूलतः संस्कृत का है इसे हिन्दी में विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा, तर्क आदि का पर्याय माना गया है। (1) विमर्श जब साहित्य में आता है तब जीवन का यथार्थगत तर्कपूर्ण वास्तविक चित्र उभरता है। हम साहित्य को उसके चित्रण के आधार पर दो वर्गो में बॉटते हैं– काल्पनिक और वास्तविक साहित्य, लोक साहित्य और परलोक साहित्य, यथार्थ और मिथकीय साहित्य, भ्रमपूर्ण और तर्कपूर्ण साहित्य, अखण्ड साहित्य और पाखण्ड साहित्य आदि। प्राचीन काल में दरबारी, संस्कृति व राजतंत्र के प्रभाव में जनता को बहलाने, फुसलाने एवं बेवकूफ बनाये रखने के उद्देश्य से मनोरंजनात्मक एवं पाखण्ड पूर्ण काल्पनिक साहित्य रचे गये, राजसत्ता और धर्मसत्ता दोनों ने मिलकर कूटनीति व षड़यंत्र से जनता को आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक गुलामी में जकड़े रखा और इसमें महत्वपूर्ण भूमिका साहित्य की रही। लोगों को काल्पनिक तथ्य भरपेट परोसे गये ताकि उन्हें बौद्धिकता की भूख का अहसास न हो। मूढ़तापूर्ण चीजों को इस तरह स्थापित किया गया कि वे जनता के जीवन मूल्य, परम्परा और संस्कृति के अनिवार्य हिस्सा हो गये। काल्पनिक साहित्यों ने मानव–मानव में विभेदनकारी, विघटनकारी और विकृत व्यवस्था को समाज स्वीकृत करा लिया, यह साहित्य के पतन की पराकाष्ठा थी। लेकिन जब लोक जागता है तब क्रांति होती है। और लोक को जगाने के लिये विचार की अग्नि धधकानी पड़ती है। यह चेतना जागृत करने का काम भी साहित्य ने किया। लोक साहित्य, वैचारिक साहित्य, आधुनिक साहित्य एवं विमर्श साहित्य ने लोक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके लिये जमीन तैयार करने का काम मानवतावादी दर्शनों, संत साहित्य आदि ने किया।

साहित्य व्यक्ति के मन और मस्तिष्क की उर्वरता का सूचक माना जाता है। (2) लेकिन इसी मिथकीय मनगढ़ंत साहित्य ने मन और मस्तिष्क को बंजर बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा।

बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य एवं संत साहित्य ने हिन्दी में जीवन मूल्यों को स्थापित करते हुए मानवता के धरातल पर लोकचेतना जागृत करने में महती भूमिका निभाई इसे आज हम दलित चेतना या दलित चिंतन के विकास के रूप में रेखांकित कर सकते हैं। इन्होंने राजसत्ता और धर्मसत्ता के स्थान पर लोकसत्ता को स्थापित करने की पुरजोर कोशिश की। इसी लोकसत्तात्मक भूमि पर वैश्विक क्रांति, नवजागरण, मार्क्सवाद, दलित पैंथर, फेमिनीज्म, आधुनिकता बोध के अंकुर फूटे और विमर्शो के बरगद

*सहायक प्राध्यापक हिन्दी शासकीय महाविद्यालय सनावल जिला-बलरामपुर (छ.ग.)

Scanned by CamScanner

खडे हुए। विमर्शो का जन्म साहित्य के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी क्रांति है। क्रांति का पहला रूप विनाशकारी प्रतीत होता है परन्तु इसके पीछे सदियों की घुटन लाखों मनुष्यों का दारूण हाहाकार है जो क्रांति से ही शांत होता है और यही क्रांति को अनिवार्य बनाता है। क्रांति वही करते है जो दुःखी है, दूसरे के दुःख को पहचानते हैं। क्रांति के मूल में मानवीय करूणा तथा प्रेम है, उसका मूल उद्देश्य रचनात्मक और स्थायी है। (3) विमर्श साहित्य समाज के लिये अत्यंत कल्याणकारी है। यह सामाजिक विद्रूपताओं को उसी तरह निकाल फेंकना चाहता है जैसे कोई सर्जन कैंसर को।

पूरी दुनिया में मनुष्यों के बीच रंग, नस्ल, लिंग, भाषा, धर्म, जाति, संस्कृति, क्षेत्र व अनेक आधार बनाकर भेदभावपूर्ण नीतियॉ विकसित हुई। भारत में वर्ण व्यवस्था या जाति व्यवस्था के आधार पर शुद्रों के साथ अमानवीय व्यवहार सदियों से होते रहे तथा स्त्रियों के साथ अमानवीय बर्ताव होता रहा है, विशेषकर दलित एवं आदिवासी स्त्री का जीवन आज भी बहुत बेहतर और सुरक्षित नहीं हो पाया है। ऐसी स्थिति में भारतीय परिप्रेक्ष्य में दलित चिंतन/दलित साहित्य/दलित विमर्श का जन्म हुआ फिर नारीवादी आंदोलनों के प्रभाव से स्त्री चिंतन/स्त्री साहित्य/स्त्री विमर्श का जन्म हुआ। ये दो मूल विमर्श हुए। कालान्तर में दलित विमर्श से ही आदिवासी साहित्य/आदिवासी विमर्श की स्वतंत्र सत्ता विकसित होती हुई दीख पड़ती है। शोषित, दलित, उत्पीड़ित, मसले, रौंदे, कुचले गये शुद्र वर्ण के निचले पायदान पर नारकीय जीवन जी रहे हाशिए के समाज की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाला साहित्य दलित साहित्य कहलाया। हिन्दी दलित साहित्य को मराठी से प्रेरित माना जाता है। यह दलित साहित्य समता, न्याय, बंधुत्व, स्वतंत्रता और मानवता पर आधारित है इसमें वेदना, आक्रोश, यथार्थ का चित्रण और संभावनाओं की तलाश है। ज्योतिबा फूले एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने एक स्पष्ट विचारधारा की नींव रखी जिस पर यह टिका है। दलित साहित्यकार डॉ. चन्द्रकुमार बरठे लिखते हैं – डॉ. अम्बेडकर द्वारा संपादित एवं प्रकाशित समाचार पत्र 'मूकनायक' के प्रकाशन (20.11.1920) से ही दलित साहित्य का आरंभ माना जाना चाहिए। (4) दलित साहित्य आज विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि में रचा जा रहा है परंतु इसमें सबसे सशक्त रूप में उभरकर सामने आनेवाली विधा दलित आत्मकथाऍ हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जूठन', मोहनदास नैमिशराय की 'अपने अपने पिंजरे' भगवानदास की 'मैं भंगी हूँ' श्रवण कुमार की 'मेरा गुनाह' सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत' माता प्रसाद की 'झोपड़ी' डी. आर. जाटव की 'मेरा सफर, मेरी मंजिल' आदि हिन्दी की प्रमुख दलित आत्मकथाऍ हैं। (5) कुछ दलित आत्मकथाऍ मराठी से हिन्दी में अनूदित भी हैं जैसे – 'अक्करमाशी' (शरण कुमार लिंबाले) 'अछूत' (दया पवार) 'तराल–अंतराल' (शंकर राव खरात), 'पराया' (लक्ष्मण माने) आदि। (6)

इसी तरह स्त्री विमर्श के क्षेत्र में राजेन्द्र यादव, ममता कालिया, चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुष्पा, अर्चना वर्मा, नमिता सिंह, अनामिका, जया जादवानी, सुमन केशरी, रोहणी अग्रवाल, लता शर्मा, प्रत्यक्षा, वंदना राग, प्रभा खेतान, रमणिका गुप्ता, गीताश्री, जयश्री राय, उर्मिला शिरीष, विभा रानी, मधु अरोड़ा, सुधा ओम ढींगरा, सुषमा मुनीन्द्र, पुष्पा सक्सेना, शीला रोहेकर, सपना सिह, प्रीति चौधरी आदि के नाम उल्लेखनीय है। (7)

आधुनिक आदिवासी साहित्य लेखन में राजीव रंजन, लाला जगदलपुरी, ब्रम्हवीर, जसिन्ता केरकेट्टा, महोदव टोप्पो, वाहरू सोनवणे, अनुज लुगुन, निर्मला पुतुल आदि से प्रारंभ होकर अनेंक नाम उल्लेखनीय हो सकते हैं।

Scanned by CamScanner

आज विमर्श की अनेक धाराएँ फूट पड़ी है जिनमें दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, विकलांग विमर्श, पारिस्थितिकी विमर्श, किन्नर विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श, पिछड़ा वर्ग विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श चल पड़े हैं और तो और कुछ लोग गाय विमर्श की भी चर्चा शुरू कर रहे हैं। जो विमर्श वंचित, पीड़ित, दमित, हाशिए के समाज के लिए प्रारंभ हुआ था उसकी दिशा को पूरी तरह छद्म विमर्श के माध्यम से परिवर्तित और निष्प्रभावी करने का षडयंत्र चल रहा है। यदि ऐसा ही हाल रहा तो कुछ दिनों बाद गोबर विमर्श भी शुरू कर दिया जाएगा और विमर्श को गोबर साबित कर दिया जाएगा। यह एक साहित्यिक चालबाजी है जिसमें चालक लोगों ने पहले विमर्शो को रोकने की कोशिश की, जब रोक नहीं पाये तो उसके भीतर दीमक की तरह घुसने की कोशिश की और कुछ चीजें चाट गये। लेकिन जब इससे भी बात नहीं बनी तब नये–नये काल्पनिक विमर्श खड़े करने लगे ताकि मूल (दलित, आदिवासी, स्त्री) विमर्श को कमजोर किया जा सके। इनकी आडियोलाजी में डॉ. अम्बेडकर नहीं हैं। जबकि भारतीय परिप्रेक्ष्य में सारे विमर्श डॉ. भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा से ही शुरू होने की पूरी संभावना रखते हैं विमर्श कोई खाज की खुजलाहट या बौद्धिक गपशप नहीं है, बल्कि यह सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन का शंखनाद है। यह जातिभेद, लिंगभेद एवं अन्य असमानताओं और शोषण के विरूद्ध क्रांतिकारी स्वर का आगाज करते हुए समतामूलक समाज की स्थापना का पक्षधर है जो कि अम्बेडकारी विचारधारा और भारत के संविधान की आत्मा है। परन्तु इससे परे विमर्शो का तानाबाना बुना जा रहा है जो कि भटकाव का मार्ग प्रशस्त करेगा। इससे सावधान रहने की जरूरत है।

विमर्शो पर अनेक संदेह और सवाल उठाये जा रहे हैं यह सुनियोजित तरीके से हो रहा है। पहले हाशिए के लोगों को उनके व्यक्तिव की गरिमा में नहीं देखा जाना, फिर उनके संतो महापुरूषो व उनकी विचाारधारा को अमान्य करना और अब उनके साहित्य को साहित्य के रूप में स्वीकार नहीं करना। इस प्रकार सामाजिक अस्पृश्यता, वैचारिक एवं राजनैतिक अस्पृश्यता व साहित्यिक अस्पृश्यता आज भी विद्यमान है।

आजादी के सत्तर वर्षो बाद भी रोहित वेमुला काण्ड, पायल तड़वी काण्ड, हरियाणा गैंगरेप, ऊना, मुजफ्फरपुर, सहारनपुर की घटनाएँ, सोनभद्र में आदिवासियों को गोली मारने, बस्तर में नक्सली बताकर गॉव के गॉव आदिवासियों को प्रताड़ित करने, जशपुर व सरगुजा से हजारो आदिवासी बालिकाओं का गायब हो जाना, सोनी शोरी के साथ अमानवीय अत्याचार, दलित बस्तियों में आग लगा देना दलित आदिवासी स्त्रियों का शारीरिक शोषण आर्थिक शोषण आदि घटनाएँ रूकी नहीं है। बल्कि आज भी इस देश में अमीना बेची जाती है, भंवरी बाई, फूलन देवी आदि कई स्त्रियॉ रोज बलात्कार की शिकार होती हैं। समस्तीपुर (बिहार) में दलित स्त्री नंगी की जाती है, हेंदेगढ़ा में एक चमार लड़के से प्रेम विवाह करने पर मालती नंगी कर दागी जाती है और महावीर को पत्थरों से कुचलकर मार दिया जाता हैं। [8] आज भी दलित आदिवासी और स्त्री की पीड़ा व्यथा, समस्याएँ राष्ट्रीय चेतना और संवेदना से अलग रखी जाती है। दिल्ली की निर्भया और हरियाण ा की डॉ. प्रियंका कांड तो राष्ट्रीय मुद्दा बन जाते हैं पर करोड़ो दलितों आदिवासियों और उनकी महिलाओं के साथ होने वाली अमानवीय घटनाओं पर देश गूंगा–बहरा–अंधा क्यों बन जाता है?

ऐसी स्थिति में आज हम संक्रमण काल में खड़े हैं जहॉ विमर्श की धारा नष्ट करने का षड़यंत्र है तो दूसरी ओर विमर्श को मूल धाराओं में मजबूती के साथ खड़ा करने की जरूरत भी। पीड़ित हाशिए का समाज अपने उत्तरदायित्व को महसूस करे विमर्श की मशाल लेकर निरन्तर चिंतन, मनन, लेखन और उद्‌बोधन

Scanned by CamScanner

(संबोधन) जारी रखें। ये विमर्श ही हाशिए की अस्मिता की तलाश कर पाएंगे और मुख्यधारा में ला सकेंगे, मानसिकता परिवर्तन करा सकेंगे। समतामूलक समाज की स्थापना अब विमर्श के कलमकारो के सहारे ही संभव हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1 Hindi Oxford Living Dictionaries – hi.oxforddictionaries.com
2 दलित आत्मकथा (हिन्दी) के सरोकार – रूपा सिंह, ओमेगा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2013 भूमिका
3 परम्परा, इतिहास बोध और साहित्य – डॉ. रवि श्रीवास्तव, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2005, पृष्ठ – 78
4 दलित आत्मकथा (हिन्दी) के सरोकार –रूपा सिंह, ओमेगा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2013 पृष्ठ – 4
5 वही, भूमिका
6 वही
7 आखिर क्यों लिखती है स्त्रियॉ – सं. रजनी गुप्त, सुभाष राय, हरे प्रकाश उपाध्याय, शिल्पायन दिल्ली, 2014 पृष्ठ – 19 – 224
8 स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने – रमणिका गुप्ता, शिल्पायन दिल्ली, 2010 पृष्ठ – 9

अन्य सहायक ग्रंथ

1 आदिवासी लोक (लोक संस्कृति) –2 – रमणिका गुप्ता, शिल्पायन दिल्ली, 2012
2 जनजातीय विमर्श – डॉ. ज्योति मिश्र, पंकज बुक्स दिल्ली, 2011
3 स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका – डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन, साहित्य संस्थान गाजियाबाद, 2012
4 दलित चेतना की कहानियॉ बदलती परिभाषाएँ – राजमणि शर्मा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2010

Scanned by CamScanner